"मेरी स्वामिनी"

मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी- ये हृदय के सबसे भीतरी भाग से निरंतर पुकार के अपने अनन्त काल की आनंद प्राप्ति की वासना को जो पूर्ण करने की चेष्टा करने में आप सब महानुभाव लगे हुए हैं, आप सब का स्वागत है।

मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी... इसके अलावा गौड़ीय वैष्णवों के हृदय में कुछ नहीं चलता। यदि चलता है तो वही आनंद में बाधा है। मेरी स्वामिनी, मेरी..., हमारी नहीं; मेरी, सिर्फ मेरी, मेरी स्वामिनी।

मेरी स्वामिनी की महिमा कैसी है? निखिल जगत को जो अपने अधीन किए हुए हैं निरंतर, पूरे विश्व को जो मोहित किए हुए हैं, वे कौन हैं? श्याम, कृष्ण। निखिल जगत को हर प्रकार से अपने अधीन किए हुए हैं, निरंतर, हर पल, वे हैं श्याम। और श्याम हैं कौन? इस जगत में प्रत्येक जीव को अपने अधीन किस ने किया हुआ है? कामदेव ने। तो कामदेव जो हैं... श्याम इतने सुन्दर हैं, इतने सुन्दर हैं, कि श्याम की छाया के दर्शन भी अगर हो जाएँ तो करोड़ों कामदेव मूर्छित हो जाते हैं। इतने सुन्दर हैं श्याम। तो ऐसे श्याम..., जिनके पीछे लक्ष्मी जो हैं, नारायण वक्ष विलासनी, वो भागती रहती हैं। ऐसे श्याम जिनके सदा अधीन, *"जा के अधीन सदा ही सांवरो"*, **जो सदा अधीन ऐसे श्याम जिनके रहते हैं, वे हैं हमारी स्वामिनी।** हम कोई ऐसे वैसे की उपासना करते हैं? नहीं। मेरी महारानी श्री राधारानी, *"जा के अधीन सदा ही सांवरो"*, हमेशा अधीन रहते हैं श्री कृष्ण।

राधारानी का रूप माधुर्य ऐसा है कि उसका वर्णन करना भी सम्भव नहीं, वर्णन करना सम्भव नहीं... राधारानी के सौन्दर्य, सौन्दर्य अमृत, माधुर्य अमृत के सामने जो अन्य ब्रज सुन्दरियाँ हैं, जो गोपियाँ हैं वे लज्जा के मारे अपनी गर्दन झुका लेती हैं। इतनी, इतनी सुन्दर हैं मेरी स्वामिनी। राधारानी बोलेंगे..., तो होंगी, पर मेरी स्वामिनी इतनी सुन्दर हैं। *"जा के अधीन सदा ही सांवरो"*। **कृष्ण हमेशा उनके अधीन रहते हैं और ब्रज सुन्दरियाँ उनके दर्शन करके लज्जा के मारे अपने नयन झुका लेती हैं।** और ये ब्रज सुन्दरियाँ कौन हैं? क्या ये सामान्य हैं कोई? क्या कोई सामान्य स्त्रियाँ हैं? न। करोड़ों-करोड़ों लक्ष्मियाँ जो हैं, लक्ष्मी से सुन्दर कोई हो सकता है? करोड़ों-करोड़ों लक्ष्मियों को हतप्रभा, अपने सौंदर्य से एकदम निष्प्रभा करने वाली एक-एक ब्रज सुन्दरी है। करोड़ों लक्ष्मियों को निष्प्रभा करने वाली एक-एक ब्रज सुन्दरी है। और ऐसी-ऐसी करोड़ों ब्रज सुन्दरियाँ राधारानी के रूपामृत के सामने लज्जा के मारे अपने नयन नीचे कर लेती हैं। ये तो छोड़ो- जो मोहिनी अवतार है भगवान् का, वो हों, पार्वती हों, कुछ भी हो, ये सब जो विश्व की सबसे बड़ी सुन्दरियाँ हैं, ये मेरी स्वामिनी हैं न जो

मेरी स्वामिनी, उनके नख के अग्र के भाग की जो कान्ति है, उसी में बह जाता है उनका सौंदर्य। नख की कान्ति के सौंदर्य में ये सारी विश्व मोहिनियों का, विश्व मोहिनी छोड़िये, स्वयं श्याम मोहिनी रूप में, पार्वती, सबका ये जो सौन्दर्य है, उनके नख के अग्र भाग के प्रभाव मे बह जाता है। यह प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद कहते हैं। ऐसे नहीं कह रहे कि काव्य रचना कर रहे हैं। देख रहे हैं, बोल रहे हैं। देखा और बोला, किसके बारे में? राधारानी के बारे में? मेरी स्वामिनी के बारे में। ऐसी हैं मेरी स्वामिनी। जो विश्व मोहन हैं, जो पूरे विश्व को मोहित किए रहते हैं, जिनकी मैं उपासना कर रही हूँ, कर रहा हूँ, जिस परम तत्व की मैं उपासना कर रहा हूँ, जिनका मैं निरन्तर नाम रटता रहता हूँ, जिनका मैं निरन्तर चिन्तन करता हूँ, जिस तत्व का मैं चिन्तन करता हूँ ,उस तत्व के अधीन ये परमतत्व सदा ही रहते हैं। कैसे रहते हैं अधीन?

"वेणुः करान्निपतितः स्खलितं शिखण्डं, भ्रष्टं च पीतवसनं ब्रजराजसूनोः।
यस्याः कटाक्षशरघात- विमूर्च्छितस्य, तां राधिकां परिचरामि कदा रसेन।।"
(श्रीश्रीराधारस-सुधानिधि ३९)

ऐसे अधीन रहते हैं कि राधारानी का कटाक्ष प्राप्त हो जाए यदि, तो सरकार मूर्छित हो जाते हैं। सरकार के होश नहीं रहते। सबके होश उड़ाने वाले के होश नहीं रहते, किसके सामने? मेरी स्वामिनी के सामने। इससे बड़ा कोई गर्व हो सकता है क्या? कोई गर्व इससे बड़ा हो सकता है? अरे, यही गर्व महारस में डूबा देगा..., यही गर्व। कुछ भी नहीं करना। **भक्ति क्या है? कुछ भी नहीं।। इस गर्व में डूबे रहना। मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी।। उनके अधीन सदा श्री कृष्ण रहते हैं।** अरे वेणु छूट जाती है, पीताम्बर छूट जाता है, बेसुध हो जाते हैं, होश नहीं रहता। हाथ जोड़े..., राधारानी के सामने प्रार्थना करना तो बहुत छोटी बात है, अरे मेरे सामने प्रार्थना करते रहते हैं- "दर्शन करवा दो।" क्योंकि जहाँ सरकार की पहुँच नहीं है, वहाँ मंजरियों की पहुँच है। प्रर्थना करते रहते हैं, काकुवाणी, हाथ जोड़े विनम्रता से, दर्शन करवा दो। रसनिधी हैं। उस रस स्वरूप श्रीकृष्ण की रस वासना का निरंतर पूर्ण निवृत्ति करती रहती हैं अपने रूप माधुर्य से। **ऐसी स्वामिनी की मैं दासी हूँ, की मैं सेविका हूँ, ऐसी स्वामिनी मेरे प्राण हैं।**

जो आनंद श्रीकृष्ण को प्राप्त होता है राधारानी के संग से और फिर राधारानी को जो आनंद प्राप्त होता है, श्रीकृष्ण के वर्धित आनंद के दर्शन करके, वह **अतिशय आनंद सारा, हर समय, मंजरियों को भी प्राप्त होता रहता है,** हर समय। कैसे आनंद प्राप्त

होता है? श्री कृष्ण दर्शन करते हैं राधारानी के, दर्शन करते हैं तो लगता है कि यह तो अभी मैं पहली बार देख रहा हूँ। निरन्तर दर्शन करते-करते भी यही लगता है कि यह मैं पहली बार दर्शन कर रहा हूँ। क्यों? जब दर्शन करते हैं तो फिर नई छटा, फिर नया। जब श्री कृष्ण दर्शन करते हैं सांयकाल में लगभग ५:३० बजे अष्टकाल में, जब राधारानी के दर्शन प्राप्त होते है जब श्रीकृष्ण गैय्या चरा कर आते हैं, उनकी दृष्टि होती है लज्जा युक्त- "मैं तो कुछ सेवा कर ही नहीं पाई और हर्षित भी हैं कि दर्शन तो सम्भव हुए।" हर्षित भी हैं, लज्जा भी है। और फिर जो कटाक्ष प्राप्त होता है, श्रीकृष्ण उस एक छवि को निरंतर अपने हृदय में संजो कर रखते हैं रात्रि तक, क्योंकि उससे पहले अगर दर्शन यदि नहीं होंगे तो करेंगे क्या। वे राधारानी के दर्शन के अलावा क्या कुछ और भी करते हैं? न न, वे इसके अलावा कुछ नहीं करते।

तो वो एक छवि का ध्यान करते रहते हैं और राधारानी की जो छवि है, जो रूपामृत है, वह पल-पल नया। अभी दर्शन किए, दुबारा किए, फिर नया। जब, जब नई छवि दिखती है तो कृष्ण का आनंद और वर्धित हो जाता है। कृष्ण के आनंद को वर्धित देखकर राधारानी खुश, नई छवि फिर से प्रकट। फिर कृष्ण दर्शन कर रहे हैं फिर नया, फिर कृष्ण का आनंद वर्धित। तो कृष्ण का आनंद प्रतिक्षण वर्धमान होता रहता है और राधारानी का रूपामृत प्रतिक्षण वर्धमान होता रहता है। दोनों में होड़ लगी रहती है और मंजरियाँ इन दोनों के साक्षात् आनंदरस का पान करती रहती हैं। कृष्ण किसका पान कर रहे हैं? राधारूप का। और राधारानी किसका पान कर रही हैं? कृष्ण की आसक्ति का, कृष्ण के प्रेम का, कृष्ण के रूपामृत का। और मैं किसका पान कर रही हूँ? मैं मेरी स्वामिनी के द्वारा उस महारस सिन्धु, आनंद सिन्धु का पान पूर्ण रूप से मैं भी कर रही हूँ।

अहो... मेरी स्वामिनी सुख रूप।
अहो, अहो... मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी।

यह आनंद जो है उन्हीं को प्राप्त होता है जो राधारानी को ही अपना मानते हैं, मेरा मानते हैं, राधारानी के अलावा और किसी को भी अपना नहीं मानते। यह जो देश है ब्रज का, विशेषकर मंजरी भाव, यह ममता का देश है। अतिशय ममता। जिस मात्रा में ममता होगी, उसी मात्रा में आनंद प्राप्त होगा। ब्रज भक्तों में भी अनेक प्रकार की ममता है तो अनेक प्रकार का आनंद प्राप्त होता है। पुराणों में बताया गया है-

"अनन्यममता विष्णौ ममता प्रेमसंगता।
भक्तिरित्युच्यते भीष्म-प्रह्लादोद्धवनारदैः।।"

(श्री श्री भक्तिरसामृत सिन्धु १.४.२,
श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २३.८)

भक्ति का मतलब क्या है? ममता, भगवान् में ममता। ममता तो हम में है, संसार में डाली हुई है। संसार से हटा कर ममता डालना विष्णु में।

अनन्यममता विष्णौ- यह भगवद् भक्ति का लक्षण है। अब आप सोचिए कि विष्णु में ममता डालना, यह भक्ति है। परन्तु कृष्ण का... अपनी स्वामिनी के बारे में सोचिए, इससे पहले लक्ष्मी के द्वारा ठाकुर को जानिए, ठाकुर के द्वारा राधारानी को जानिए। विष्णु में अनन्य ममता जो है, वह भक्ति है। तो क्या लक्ष्मी से ज़्यादा कोई भक्तिवान् होगा विष्णु का? कोई भी होगा, लक्ष्मी से ज़्यादा भक्तिवान्? नहीं। लक्ष्मी से ज़्यादा भक्तिवान् विष्णु का कोई नहीं हो सकता। परन्तु वो भक्तिवान् लक्ष्मी, ठाकुर जी के रूप माधुर्य से इतनी आकर्षित होती हैं कि नारायण का वक्ष स्थल छोड़कर, वे ठाकुर के पीछे जाती हैं। तो जिनकी ममता विष्णु में है, वे परम ममतावती जो हैं, वो विष्णु में जिनकी है, वे ठाकुर के पीछे जाती हैं। और हम, मैं तो मेरी स्वामिनी के पीछे ही रहती हूँ, मैं तो ऐसे ठाकुर से भी कोई सरोकार नहीं..., ऐसे गोविन्द से भी कोई सरोकार नहीं है। मैं तो हमेशा उसी गोविन्द की उपासना करती हूँ जो मेरी स्वामिनी के अधीन रहते हैं हमेशा।

तो जो विष्णु के प्रति ममता है, उससे भी कहीं अधिक ममता होगी लक्ष्मी की कृष्ण के प्रति, जो वे कृष्ण के पीछे जा रही हैं और मंजरियों की ममता का क्या कहना, जो नारायण को छोड़ो, लक्ष्मी को छोड़ो, विष्णु को छोड़ो, सब को छोड़ो, कृष्ण तक को छोड़ो, केवल अहो मेरी स्वामिनी सुखरूप ! **इतनी अतिशय ममता होगी तो राधारानी की सेवा मिलेगी, तो राधारानी का आनंद प्राप्त होगा।** लक्ष्मी ठाकुर के पीछे भाग रही हैं और ठाकुर हमारे पीछे भाग रहे हैं दर्शन करा दो। और यह आनंद उसी को मिलता है जो केवल राधारानी को ही अपना मानता है। कृष्ण को ही नहीं अपना मानना, तो तृष्णा को कैसा अपना मानना? कृष्ण को ही अपना नहीं मानना। कृष्ण ही अपने नहीं हैं, मेरे नहीं हैं। मेरी केवल राधारानी, मेरी महारानी, अपनी केवल राधारानी ही हैं।

देखिए, अपना तन, अपना मन, अपना जीवन स्वामिनी को समर्पित कर दीजिए एक बार, फिर देखिए आनंद का झरना बहना रुकेगा नहीं। उनको एक बारी अपना मान लीजिए। हमने अनन्त जन्मों से अनन्त लोगों को अपना माना है उनके अलावा, यह हमारी बुद्धि है। उनको, एक को मानने के अलावा, वो मेरी हैं; हमने सबको अपना माना है। इसी वजह से भक्ति में आने के बावजूद भी आनंद प्राप्त क्यों नहीं होता? क्योंकि मैं उन्हें अपना मानती ही नहीं हूँ। यदि वो मेरे हैं और मैं अपना मानता हूँ तो उनके सुख में मेरा सुख और उनके दुःख में मेरा दुःख। आप सोचोगे क्या भगवान् को भी दुःख होता है? बिल्कुल होता है। देखते नहीं, रो रहे हैं ठाकुरजी, दिव्य दुःख, दिव्य सुख दिव्य दुःख।

श्रीकृष्ण राधारानी की सेवा करके परम आनंदित होते हैं। उसी प्रकार मंजरियाँ भी राधारानी की सेवा करके परम आनंदित होती हैं। आप सोचिए, यदि युगल को अच्छी माला पहनाएँगें तो क्या उनको सुख नहीं होगा? सुख कब होगा? जब उन्हें हम अपना मानेंगे। अगर किसी और को बोलें कि, हाँ Mr. John को, किसी ने बहुत अच्छे कपड़े पहने थे, बहुत अच्छी माला पहनाई थी, तो आप को कुछ हुआ? कोई France में रहता है, बहुत सुन्दर है, बहुत अमीर है, वह अपनी पत्नी के साथ बहुत अच्छे से रहता है, कुछ हुआ? नहीं। पर आपके बेटे ने एक toffee खाई, वह खुश हो गया, आपको कुछ हुआ? आप कितने प्रफुल्लित हो गए। "अहो मेरे बेटे ने खाई है।" सारा खेल क्या है? मेरे का। वहाँ करोड़ों रुपये किसी को मिल रहे हैं, किसी को भारत के प्रधानमंत्री से इनाम मिला, आपको कुछ हुआ? नहीं। मेरे बेटे को पेंसिल मिल गई टीचर से तो मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं। असीमित आनंद प्राप्त हो रहा है। क्यों? मेरा माना है। सारा खेल मेरेपन का है, अपनेपन का। यह जब तक राधारानी में पूर्ण रूप से नहीं होगा, जितनी मर्ज़ी माला कर लें कुछ नहीं होगा। मेरी हैं। यदि वे मेरी हैं तो उनके थोड़े से हँसने पर मैं कितना खुश होऊँगा। आप अपने बच्चे के लिए, पति के लिए भोजन बनाते हैं, वो ज़रा सा मुस्कुरा दें, तो बस वही छवि संजो करके रखते हैं और अगले दिन के भोजन का सोचने लग जाते हैं कि ये बनाऊँगी। उसी प्रकार राधारानी राधाकुण्ड में मध्याह्न काल में इसी समय जलकेली कर रही हैं। वे कितनी खुश हैं तो हम कैसे सुन रहे हैं यह कथा? जैसे हम कोई किसी विदेश में रहने वाले किसी व्यक्ति के बारे में सुन रहे हैं, बात कर रहे हैं। अरे मेरी हैं, मेरी होने का मतलब है कि उनके अलावा मेरा कोई नहीं है।

आप अपने जीवन में देखें, आप के चार पाँच लोगों को छोड़ कर आपके जीवन में उनके अलावा कोई नहीं होता। वही अपना परिवार, बीवी बच्चे मूलतः। उनको छोड़ कर जो भी सम्बन्ध है किसी से भी, जो भी आपका आनंद है, उनको मूल में रखकर है। जीव वास्तव में बिल्कुल अकेला है, उसका किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है। जहाँ पर वह मेरापन डालेगा, उसी में वह सारे आनंद का अनुभव करेगा, सारे दुःख का अनुभव करेगा। किसी का पूरा धन लुट गया, आपको कुछ हुआ? नहीं हुआ। आपका pen गुम गया, दुःख हो गया। कोई road पे आ गया, आपको कुछ हुआ? नहीं हुआ। अखबार पढ़ रहे हैं, news सुन रहे हैं- आज पाँच लोगों को फाँसी है, अच्छा हाँ। और साथ में चाय पी रहे हैं। क्योंकि उनसे कोई मेरापन नहीं है, अपनापन नहीं है। और यदि हमारे बेटे की अंगुली में खरोंच आ गया तो हाय-हाय..., क्या हुआ। तो उनके सुख में मेरा सुख, उनके दुःख में मेरा दुःख। जिनको अपना माना...

हमें आनंद कैसे मिलेगा भक्तों को? हमने कभी राधारानी के दुःख के बारे में कभी सोचा भी है, अनुभव करना तो बहुत दूर की बात है? कभी सोचा भी सही कि राधारानी को दुःख हो रहा होगा? एक महिला थी, उनकी एक बेटी थी, वह ढाई बजे तक स्कूल बस से घर आ जाती थी। ढाई बज गए, वह आई नहीं। १५ मिनट ऊपर हो गए, तो उन्होंने रोना शुरु कर दिया - "मेरी बेटी नहीं आई, मेरी बेटी नहीं आई, १५ मिनट हो गए।" और यहाँ स्वामिनी हमारी रात को कितनी मुश्किल से..., हमारी स्वामिनी तो विवाहित हैं, परकीय भाव की उपासना है गौड़ीय की, वे इतनी मुश्किल से घर से निकल कर आई हैं, कुँज में अकेली बैठी हैं, रोए जा रही हैं, रोए जा रही हैं, उनका रोना बन्द नहीं हो रहा, late हो गया है इतना, हमें कुछ हो रहा है? हमारा रोना शुरु हो जाना चाहिए। अरे श्याम आए नहीं, श्याम आए नहीं, स्वामिनी के प्राण निकलने वाले हैं और हमें कुछ नहीं हो रहा अगर। नहीं हो रहा क्योंकि अपना नहीं माना, मेरा नहीं माना। और स्कूल से १५ मिनट बच्ची late आइ, तो रो-रो कर बुरा हाल हो गया उस माँ का, "मेरी बच्ची नहीं आई।" क्यों? क्योंकि उसको अपना माना है। तुम माँ हो क्या? तुम तो आत्मा हो। तो मेरा, मेरा किसी को आधार जीवन का बनाते हो न, तो जिसको आधार बनाते हो, उसी के सुख-दुःख में सारे सुखी-दुःखी होते हैं हम। यदि हम प्रियाजी से प्रेम करते हैं तो हम सोचें न कि प्रियाजी इंतज़ार कर रही हैं श्याम का और मैं कितनी दुःखी हो रही हूँ। और मैं अकेली हूँ।

ऐसा नहीं है कि करोड़ों दासियों में से मैं एक हूँ, मैं नहीं तो कोई और होगी, नहीं-नहीं..., केवल आप। यहाँ घर में, आप के बच्चों की कितनी माँ होती हैं? तो वैसे ही

मैं उनकी एकमात्र दासी हूँ। वो मेरी एकमात्र स्वामिनी हैं। कोई हज़ारों माँ नहीं होती, हज़ारों दासियाँ नहीं हैं, इसमें तो ममता ही चली जाएगी। यह भारत के प्रधानमंत्री की तरह भारत की प्रजा से सम्बन्ध नहीं है कि करोड़ों में से एक मैं भी हूँ। नहीं। एक वो हैं, एक मैं हूँ और ठाकुर आ नहीं रहे। तो उनके दुःख में अतिशय दुःखी होना और उनके सुख में खुश होना। जब वे जलकेलि कर रही हैं, तब कितनी खुश हो रही होंगी। वे अपने घर से बहाना करके सूर्य पूजा में निकल कर आई हैं। कितनी मुश्किल से श्याम से मिली हैं। वे कितना दुःखी थी जब तक नहीं मिली थी और अब आईं तो मुस्कुरा रही हैं, तो उनके मुस्कुराहट पर मैं वारी जाऊँ। वो मुस्कुरा रही हैं..., हाय मैं वारी जाऊँ... बलिहारी... उनकी मुस्कान पर मेरे अनन्त जन्म कुर्बान। वे मेरी स्वामिनी हैं। उनकी ज़रा सी मुस्कुराहट से मेरे अन्दर मुस्कुराहट होना चाहिए। अपने बच्चे के, वो स्कूल में थोड़े अच्छे नम्बर लेकर आता है तो कितना फूले रहते हैं, एक-एक हफ्ते तक। ओरों को भी उसका कीर्तन भी करते हैं कि "देखो मेरे बेटे का physics में २० में से १९ आए हैं।" तो क्या हम बता रहे हैं, आज मेरी स्वामिनी ने पता है गुलाब की माला डाली थी? बच्चे ने देखा यह वाली company का brand का डाला है। कभी हम सोचते हैं कि मेरी स्वामिनी ने कितनी सुन्दर किनारी की नीलाम्बर ओढ़ा है। बताते हैं किसी को? सखियों से बात करते हैं? "आज पता है मैंने योगपीठ में यह-यह माला पहनाई।" कभी हमें भय लगता है? प्रेम का मतलब है, मेरा मानने का मतलब है भय लगेगा- "अरे मेरी स्वामिनी को कुछ हो न जाए।" दिन रात चिन्ता रहेगी..., दिन रात चिन्ता। मेरी स्वामिनी है न, किसी और की थोड़ा न हैं। मेरी..., अहो मेरी स्वामिनी।

एक बार एक सिद्ध महात्मा थे, वे दिन रात भाव-राज्य में रहते थे तो किसी ने उनको प्रसन्न करने के लिए...; जैसे रामलीला की मण्डली होती है कोई राम बनता है, कोई सीता, उसी प्रकार से निकुंज मण्डली भी होती है, कोई श्याम बनता है, कोई श्यामा। तो वो पूरी मण्डली को सजा कर ले आए बाबा के सामने, कि "बाबा, श्यामा श्याम आए हैं।" बाबा ने पूछा- "श्यामा श्याम आए हैं? मेरी स्वामिनी आई हैं?" उन दोनों को बैठाया, बात करते रहे, करते रहे, करते रहे। उनसे बात कर रहे हैं, उनका श्रृंगार कर रहे हैं। कई घण्टों बीत गए। बाबा तो बाँवरे... ये तो बाँवरों की उपासना है, जिन्हें कोई सुध नहीं है। वे तो बात करते जा रहे हैं, करते जा रहे हैं, वे तो स्वामिनी हैं उनकी, और होश ही नहीं है। तो किसी तरह ठाकुर जी जो बने थे, वे गए, उन्हें समझा रहे हैं- "इनको उठाओ, ये बाबा तो बस करेंगे ही नहीं। सुबह से रात्रि होने वाली है। वो तो बाबा तो बस करेंगे ही नहीं।" तो ठाकुर जी को फिर कोई किसी तरह लेकर गए। ठाकुर जी आए, उन्होंने बोला राधारानी को- "मैं तुम्हें इतने समय से

बुला रहा हूँ, चलो चलें, ये बाबा तो बाँवरो है, तुम क्या इसके बाप की हो? तो चलो चलें।" तो वो चले गए। थोड़ी देर में उनका सेवक आया, सेवक उनसे बोला कि, "कहाँ पर हैं?" कहते- "ठाकुर जी ले कर चले गए।" "क्यों?" "ठाकुर जी ने बोला मैं लेकर जा रहा हूँ प्रियाजी को, यह राधारानी क्या इसके बाप की है बाबा के?" तो यह सुनकर बाबा गुस्से में... "और क्या, मेरी ही तो हैं। तुम्हारी हैं क्या?" तो फिर उनको जब होश चढ़ा, तो मण्डली के वहाँ आए जब उन्हें होश आया तो। वहाँ गए तो वो सब काँप रहे थे कि बाबा आ गए। उन्होंने बैठाया, माफी माँगी, "हाँ बाबा तुम्हारी स्वामिनी हैं, तुम्हारी स्वामिनी हैं, हमारी नहीं हैं, यह लो अपनी स्वामिनी रखो।" फिर ठाकुर को डाँटा, "जब हम चाहेंगे तभी तुम्हें देंगे, तुम स्वतंत्र नहीं हो, ये मेरी स्वामिनी हैं।" इतना प्रेम।

सखी मंजरियों की कृपा से ही स्वामिनी का संग मिलता है, मेरी स्वामिनी का, इनको। ईश्वर होंगे अपने वैकुण्ठों में, यहाँ ईश्वर नहीं हैं, यहाँ तो सदा अधीन। *अहम् भक्त पराधीनो।* जो भक्तों के अधीन रहते हैं, वे कौन हैं? ये परमात्मा की परमात्मा की परमात्मा हैं। परमात्मा के परमात्मा कौन? ठाकुर। ठाकुर की परमात्मा कौन? राधारानी।

ये परमात्मा की परमात्मा की परमात्मा हैं।
मेरी महारानी श्रीराधारानी।
राधारानी की जय।।

यही ममता जब तक हम नहीं रखेंगे, उनके अलावा कोई चिंतन नहीं... वे विलस रहे हैं। विलस रहे मतलब- आनंद ले रहे हैं, क्रीड़ा कर रहे हैं और खुश कौन हो रहा है? तुम हो रहे हो। क्यों? क्योंकि उन्हें अपना माना हुआ है, नहीं तो खुश क्यों होंगे। किसी और के विलसने पर खुश होंगे? उन्हें कुछ खिलाया जा रहा है और खुश कौन हो रहा है? चारुकला ! खुश, उन्हें खिलाया जा रहा है। वे तो प्रसादी लेंगी। वे विलस रहे हैं, खुश हम हो रहे हैं; वे विहार कर रहे हैं, खुश हम हो रहे हैं; वे जल-केलि कर रहे हैं, खुश हम हो रहे हैं।

अब जल-केलि चल रही है, अब ठाकुर जी तो ठाकुर जी हैं, वे ज़ोर-ज़ोर से राधाकुण्ड का जल है, वे चला रहे हैं मेरी स्वामिनी के, "ऐ ऐ श्याम ऐ ऐ ऐ श्याम, क्या कर रहे हो?"- ऐसे बोलोगे आप। आप सह सकते हो कि आपकी स्वामिनी की आँखों में इतना

जल वो डाल दें? सहन कैसे होगा? सहोगे कैसे? "ऐ श्याम ऐ..." अब स्तुति थोड़े न करोगे- *गोविन्दम् आदि पुरुषं, तम् अहं भजामि...* "ऐ श्याम..."

ममता ही माधुर्य की खान है, ममता ही रस की खान है। जिस मात्रा में ममता होगी, उसी मात्रा में सब आनंद प्राप्त होगा। ममता नहीं तो आनंद प्राप्त नहीं होगा। ममता जितनी मात्रा में होगा, उतनी मात्रा में आनंद प्राप्त होगा। और ममता भी ऐसी की उसके सामने कोई और ममता टिक नहीं सकती।

हमारा सुख अलग और उनका सुख अलग- ये कोई उपासना है? आपकी government अलग है और उनका अलग चल रहा है, तो आप भगवत् राज्य में जाओगे कैसे? **सेव्य सेवक का सुख एक है।** सेव्य सेवक का सुख एक है। उनका जो सुख है, वही हमारा सुख है। उनमें पूर्ण रूप से अपनत्व रखना..., पूर्ण रूप से अपनत्व रखना।

हम बोलते हैं कि हमारा मन नहीं लगता जप में..., अरे मन नहीं लगता, उनको अपना मानोगे तो मन अपने आप लगेगा न। भजन उनका कर रहे हो और मान किसी और को अपना रहे हो, यही मेरा बच्चा, मेरी पत्नी, बस यही कहानी है भक्ति के बाद भी, तो आनंद कैसे होगा? अरे भाई दीक्षा ली है, दीक्षा का क्या मतलब है? सम्बन्ध होता है तभी तो अपना माना जाता है। दीक्षा का मतलब है सम्बन्ध स्थापित हो गया। भक्ति का क्या मतलब है? मुश्किल नहीं है। **भक्ति का मतलब है- मैं उनकी हूँ वो मेरी हैं, खेल खत्म।। इसके परे क्या जानना है?** और कुछ बचता है इसके अलावा। **वे मेरी हैं, इसका मतलब मेरा और कोई नहीं है। मैं उनकी हूँ बस।** इसके अलावा न कुछ सुनना है, न कुछ जानना है, कोई वेद, पुराण, पाठ करने हैं क्या? कुछ नहीं करना।

सब करना-धरना शेष करेंगे बस दिन-रात मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी। मेरी, प्रिया जी हैं, बस यही चिंतन करना है। दीक्षा का मतलब है- सम्बन्ध स्थापित होना। यह तुम्हारा परिवार है, इनके सुख में तुम्हारा सुख। दीक्षा के बाद भी वही मेरे हैं और दीक्षा से पहले भी वही लोग मेरे हैं, तो फिर दीक्षा ही क्यों हुई? दीक्षा तो अपनी life transformation के लिए है, जीवन अपना अर्पण करने के लिए कि मेरी स्वामिनी के अलावा ठाकुर भी मेरे नहीं हैं। ठाकुर भी क्या, ऐसे गोविन्द हमें चाहिए ही नहीं जो सदा राधारानी के अधीन नहीं रहते। ऐसे गोविन्द कोई होंगे तो हमें उनकी उपासना ही नहीं करनी। हमें तो हमेशा जो मेरी स्वामिनी के अधीन गोविन्द रहते हैं, उनकी उपासना करनी है।

यदि उनका सुख हमारा सुख हो जाएगा, तो हमारे क्या जीवन में कोई कमी रह जाएगी? रह जाएगी? तो वही माने न दिन-रात। उनके खाने में मैं खुश हो रही हूँ, उनकी माला पहनने पर मैं खुश हो रही हूँ, उनको अच्छी पोशाक पहना कर मैं खुश हो रही हूँ, उनको मैं अच्छे-अच्छे वस्त्र, आभूषण, ornaments, सोने का हार पहना कर, कंगन पहनाकर, नथ पहनाकर मैं खुश हो रही हूँ, उनको चंदन लगाकर मैं खुश हो रही हूँ, उनकी आरती करके मैं खुश हो रही हूँ।

हम आरती कैसे करते हैं? ४-२-१-७। इसको आरती कहते हैं? जैसे मान लो आपके पतिदेव ट्रेन से जा रहे हैं और आपको उनकी आरती करनी है, तो किस आर्तता से, कितने हृदय से आरती करेंगे। ४-२-१-७ करेंगे? नहीं। इनको कुछ हो न जाए, एक-एक molecule में यह चल रहा होगा कि- "इनको कुछ हो न जाए, इनको कुछ हो न जाए।" ऐसे ही करेंगे आरती? आपके बेटे ने result लेने जाना हो, १०वीं के बोर्ड का, तो किस प्रकार से उसकी आरती उतारेंगे? "इसको कुछ हो न जाए, इसको कुछ हो न जाए, इसके अच्छे नम्बर आएँ।" पूरी चेतना व्याप्त होगी एक-एक कण के अन्दर। किसकी? मेरा माना हुआ है। और यहाँ राधारानी की आरती में कुछ है ही नहीं, कि "उनको कष्ट होगा, वो परकीय भाव है, वे विवाहित हैं, मैं मंजरी हूँ। वो इतनी मुश्किल से जा रही हैं। उनकी ये-ये लीलाएँ होनी हैं और हम आरती कर रहे हैं।" ये कहाँ मेरा माना है? आरती कैसे की जाती है? आरती तो मतलब उनकी inauspiciousness, कोई अशुभ न हो जाए, उसके निवारण के लिए।

आप देखें कि जब तक विवाह नहीं हुआ था, तब तक माता-पिता इत्यादि ही जीवन के आधार थे। ठीक है? विवाह हुआ, पलटी मारी हमने, हमारी पत्नी और बच्चे या होने वाले बच्चे जीवन का आधार बन गए। उससे पहले ही कपड़े लेने शुरु, होने से पहले बच्चों के, खिलौने... कभी लिया राधारानी के लिए कुछ, लिया है? तो मेरी कैसे हुई? जीवन का आधार बदला या नहीं बदला जब पत्नी, बच्चे आए? अच्छा, अब दीक्षा हो गई, तो क्या अब जीवन का आधार नहीं बदलना चाहिए? सिद्ध प्रणाली मिल गई। अब आधार नहीं बदलना चाहिए जीवन का? अब तो मेरे वो हुए। बाकि सब तो duty है। नर्स की duty, नर्स से ऊपर कुछ है ज़रा सा भी कुछ है तो घाटे में रहोगे। इस संसार की dutiyān पूरी करते एक ही चीज़ मिलेगी, जो आज तक मिला है। जन्म-मृत्यु की माला। कितनी dutiyān पूरी करी हैं? आज तक duty पूरी करते-करते संसार के सब लोग मर गए, किसी की duty पूरी हुई आज तक? अरे आप मरे, आपके दादा मरे,

आपके पर-दादा मरे, पर-पर दादा मरे, किसी की duty आज तक मरने से पहले पूर्ण हुई क्या? एक ही duty है, ये समझना कि मेरी कोई duty नहीं है।

मेरी स्वामिनी के सुख में मैं सुखी, उनके दुःख में दुःखी। अरे मुझे मेरे कल्याण की ही कोई चिन्ता नहीं है। क्यों? क्योंकि वो मेरी स्वामिनी हैं, मेरी स्वामिनी, उनके सुख में सुखी रहना, उनके दुःख में दुःखी रहना। मुझे मेरा कल्याण भी नहीं चाहिए। गोविन्द नहीं चाहिए, कल्याण नहीं चाहिए, मुझे कुछ नहीं चाहिए। न सुख चाहिए, न बन्धन चाहिए, न मुक्ति चाहिए, कुछ नहीं चाहिए, मुझे किसी बन्धन से मुक्ति नहीं चाहिए। आपके सुख में मै सुखी, आपके दुःख में मै दुःखी। इतना सा गणित हम समझ लें तो सारे वेद, शास्त्र, पुराण समझ गए, तो *ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होए,* नहीं तो मूर्ख ही होए। गधा जो है, समान ढोता है, हम अक्षर ढो रहे हैं, यही भेद है। और क्या है?

जब हम योगपीठ सेवा करते हैं तो हमें होता है कि कितनी मुश्किल है योगपीठ सेवा के बाद में खिड़की से लेकर आना होता है राधारानी को, छुपाकर, वह भी कहाँ? कृष्ण भगवान् के घर, नन्द भवन में। खिड़की से लेकर आते हैं, छुपा के। "स्वामिनी रुको, रुको अभी रुको..., आ जाओ..., आ जाओ..., मेरा हाथ पकड़ लो।" ऐसे। दिन-रात यही चिन्तन।

हम यहाँ क्या करते हैं अपने घर के अन्दर, अपने बच्चों के साथ? सुबह उठते हैं, उनको स्नान करवाते हैं, फिर उनको श्रृंगार करवाते हैं, फिर उनके जूतों के lace भी tight करते हैं, फिर उनको भोग अर्पण करते हैं, फिर bag बाँध कर guard की तरह जाते हैं bus station तक, वहाँ बैठा कर आते हैं, और फिर आकर अपनी क्रियाएँ करते हैं। उसके बाद आने का होता है कि आएँगे तो राजभोग की तैयारी होती है, दोपहर की। राजभोग की तैयारी करते हैं, फिर आते हैं, उनका मुखकमल चुम्बन करते हैं, उनके गन्धामृत का पान करते हैं और उनको राजभोग करवाते हैं, फिर उनको शयन कराते हैं, उनका चरण सम्वाहन् करते हैं। यही करते हैं? फिर उनके उठने के बाद फिर से बाल-भोग दिया जाता है, छोटा। और यही हम दिन-रात कर रहे हैं और इसी में कितने सुखी रहते हैं। जो यहाँ कर रहे हैं, तो जो यहाँ है... भक्ति कुछ नहीं है, ये यहाँ पर रखा हुआ है, इसको यहाँ रखना है बस, यही है भक्ति।

यही चिन्तन हमें होना चाहिए। मेरी स्वामिनी सुबह उठी हैं, उनको पहले तो उठाना है, अरे भाई late हो गए, वे तो विवाहित हैं न, कोई Mumbai की City में थोड़ा न रह

रही हैं, New York में थोड़ी रहते हैं राधा और कृष्ण, वे गाँव में रहते हैं। पाँच हज़ार वर्ष पूर्व गाँव की क्या स्थिति होगी? सोचिए। घूंघट में रहती हैं हमेशा। कोई देख ले किसी पराए पुरुष के साथ तो आपको कोई चिन्ता ही नहीं है। सुबह उठे हैं आराम से, कोई अखबार पढ़ रहा है, कोई अपना कुछ और सोच रहा है, अरे वे घर नहीं गई हैं, चिन्ता होनी चाहिए ! "स्वामिनी उठो-उठो, ए श्याम उठते क्यों नहीं? जल्दी चलो।"- ये चिन्ता। वहाँ पहुँचे उनके चरण सम्वाहन्, जैसे बच्चों के करते हैं, जूते के lace बाँधते हैं, वैसे ही चरण सम्वाहन् करना, पोंछना। और क्या है भक्ति? कुछ और है क्या? अरे **भक्ति मतलब प्रेममयी जीवन। और प्रेम एक से होता है। मेरा एक को माना जाता है, मेरा दस को नहीं माना जाता।** अगर हमारा जीवन ही नहीं बदला दीक्षा के बाद, प्रवचन के बाद, तो हम आनंद में कैसे होंगे? ऐसा जीवन तो हम अनन्त काल से जी रहे हैं।

मेरी सर्वस्व स्वामिनी और कुछ सुहाए न, सब कुछ मेरी स्वामिनी। यहाँ आग लगे, कुछ भी हो, हमें क्या करना है? यहाँ हमारी जो भी इच्छाएँ हैं, जो भी हम बात बोलते हैं, हम अपने आपको बुद्धिमान् समझते हैं। किन्तु हम जो भी क्रियाएँ करते हैं वह मूर्खता के परिचय के अलावा कुछ भी नहीं है। जो ज्ञान में स्थित व्यक्ति हैं न, वे बस चुप रह सकते हैं। वे क्या करें, पर वे जो भी क्रिया देखते हैं न वो जीव की मूर्खता के परिचय के अलावा कुछ भी नहीं है।

हमें जीवन जीने के लिए क्या चाहिए? क्या चाहिए? भोजन। जब तक जीवन लिखा है तब तक वो ठाकुर देंगे या नहीं देंगे? तो हम जो भी इच्छाएँ कर रहे हैं, उसका कोई सिर या पैर कुछ है? **हमारी इच्छा एक ही होनी चाहिए- मेरी स्वामिनी खुश हों, मैं उनकी सेवा करुँ। उनके सुख में सुखी, उनके दुःख में दुःखी।** इसके अलावा जो भी इच्छा है, वो हमें केवल दुःख और कष्ट ही देगी। यही भक्ति है- वो मेरे हैं, वो मेरे हैं, वो मेरे हैं। हमारी नहीं हैं, मेरी हैं। *गौर आमादेर आमादेर आमादेर प्राण-* आमादेर मतलब मेरे। स्वरुप बाबा बोलते हैं न? आमादेर..., मेरे, तुम्हारे नहीं। वैसे राधारानी सिर्फ मेरी हैं। ठाकुर को सुना दिया न बाबा ने, "हाँ हमारी इच्छा होगी तब स्वामिनी तुम्हे मिलेंगी। वे मेरी हैं।" इतनी अतिशय ममता। ये ममता का राज्य है। यह ममता से सब कुछ प्राप्त होगा। मेरी, मेरी, मेरी स्वामिनी हैं वे। हमेशा इस बात का ध्यान रखना है।

अगर हम कोई भी इच्छा करते हैं स्वामिनी के सुख या दुःख के अलावा, तो उससे क्या होगा? उससे हमें कभी भी सुख प्राप्त होगा, कभी भी सुख प्राप्त होगा? और हम

क्या-क्या बोलते हैं? यह मेरा favourite है। आपकी तो ममता में अतिशय होनी चाहिए, मूर्खता में अतिशय नहीं होना चाहिए। हमें कुछ भी चाहिए, इसका मतलब हमें स्वामिनी नहीं चाहिए। ठाकुर भी चाहिए न, कृष्ण भी चाहिए न मतलब राधारानी नहीं चाहिए। तो तृष्णा चाहिए तो तब राधारानी कैसे चाहिए होंगी? कोई तृष्णा हो अगर, मेरा favourite है। Favourite क्या होता है? मुझे बहुत अच्छा लगता है खाने में यह। हम यहाँ भजनानन्दी बनने आए हैं या भोजनानन्दी बनने आए हैं? भजन में आनंद। भजन क्या होता है? उनके सुख में सुख, उनके दुःख में दुःख। भजन तो यह है, सीधा-साधा गणित है। हमें *सेवा अधिकार दिये करो निज दासी* । दीक्षा हो गई, राधारानी की सेवा का अधिकार मिल गया, जो कृष्ण को नहीं मिलता हर समय, मंजरी का वहाँ प्रवेश है जहाँ ठाकुर का नहीं है। वहाँ हमें प्रवेश मिल गया। और हम बोल रहे हैं- "यह मेरा favourite है और मैं Mall में जाना चाहता हूँ।" इसी बुद्धि के द्वारा हमारी यह गति हुई है और अभी भी इसी बुद्धि के द्वारा हम निर्णय करके चलना चाहते हैं।

बताया जाता है कि पुत्र और पति में यदि चुनना हो तो पुत्र से सौ गुणा प्रीति होनी चाहिए पति में और पति से भी अनन्त गुणा प्रीति होनी चाहिए सन्त में।

राधारानी की सेवा के अलावा कुछ भी है वो हमें कभी भी सुख नहीं दे सकता। कभी भी नहीं दे सकता गाँठ बाँध लो इस बात को। तो जो हम सेवा भी करें ये सब सखी मंजरियों की मैं सेवा कर रही हूँ, ये सब सखी मंजरियाँ हैं। 'गुरु मंजरी' क्या हैं? वें भी सखी मंजरी हैं। यह सब सखियाँ हैं, मंजरियाँ हैं। तो इनकी गुरु मंजरी, सखी मंजरियाँ तो सब राधारानी की सेवा हैं। जब धाम में होते हैं, तो प्रसादम् है राधारानी का अधरामृत जो है, तो क्या मंजरियों को नहीं देते रूप रति आदि मंजरियाँ? तो वो सेवा के अन्तर्गत राधा की सेवा में आता है और राधा ही मेरी प्राण हैं, मेरे मन की प्राण हैं, मेरे तन की प्राण हैं।

अपना बेटा जो है आपका, उसे कब-कब अपना मानते हो? सुबह जब वह स्कूल जाता है या उसके बाद भी? उसके बाद अपना मानते हो, दोपहर को? हाँ या न? रात को भी अपना मानते हो? अच्छा। यह तो Monday की बात है, Tuesday को change होता है कुछ? Wednesday को भी same रहता होगा? सातों दिन same. उसी प्रकार से मेरी स्वामिनी..., सुबह भी मेरी स्वामिनी, दोपहर को मेरी स्वामिनी, मेरी मेरी मेरी मेरी मेरी स्वामिनी। हर रोज़ मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी। तभी तो वो, जो वास्तविक भक्त हैं, वे भक्तों के अलावा, मंजरी भाव भक्तों के अलावा किसी का संग नहीं करना

चाहते। वो मेरी स्वामिनी की बात ही नहीं कर सकते। किससे करें? यशोदा माता से करेंगे, नन्द महाराज से करेंगे, ठाकुर के दोस्तों से करेंगे? किससे करेंगे? इसलिए सब सन्तों का संग करना भी अच्छा नहीं लगता। तो जब सन्तों का संग नहीं तो सांसारिक का संग करना अच्छा लगेगा?

मुख पर सदा राधा नाम हो, हृदय में राधारानी का रूप बसा हो, निरंतर उनकी सेवा, उनके सुख, उनके दुःख का ही चिन्तन चल रहा हो। उनके दुःख का भी चलना चाहिए, यह याद रखना बात को। दिव्य दुःख, दिव्य सुख। यह दिव्य अर्निवचनीय आनंद है। इस आनंद का व्याख्यान नहीं हो सकता। न ही मंजरियों की अतिशय ममता, प्रीति का व्याख्यान हो सकता है। इतनी प्रीति होती है राधारानी से। अरे **राधारानी कोटि दासी सुवत्सला हैं**। इतना प्रेम करती हैं अपनी दासियों से, इतना प्रेम करती हैं कि जब विलास भी हो रहा होता है तो मंजरियों को अपने बिस्तर के नीचे तक रख लेती हैं, इतना प्रेम होता है। वात्सल्य सिन्धु, वात्सल्य उनका किसके प्रति होता है? कौन उनके वात्सल्य में हमेशा स्नान करती हैं? मंजरियाँ। उनके प्रेम में कौन स्नान करती हैं? मंजरियाँ। तो मंजरी भाव, इसी को कहते हैं *गोपी भाव, मंजरी भाव कोरि अंगीकार।* इस भाव को अंगीकार करना है- मेरी हैं, मेरी हैं, मेरी हैं।

हमारी दीक्षा हुई, पति-पत्नी को इकट्ठी..., किसलिए दीक्षा ली थी? कि कोई किसी को, कोई मेरी स्वामिनी न माने कोई जीवन भर? वो मुझे ही अपनी स्वामिनी मानता रहे? हमने दीक्षा तो ली किसलिए? दीक्षा का मतलब है-

"जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु धन भवन सुहृद् परिवारा।
सब कै ममता ताग बटोरी, मम पद् मनहि बांध बरि डोरी।।"

(श्री रामचरित् मानस)

भक्ति के अन्दर तो यह KG qualification है। मंजरी भाव तो PhD है, सबसे ऊँची अवस्था। ये KG क्या है- यह सब बन्धन स्वरूप हैं, दुःख स्वरूप हैं, इनसे क्या ममता करनी, छोड़ो, सब ठाकुर में डाल दो- ये सामान्य भक्ति है। मंजरी भाव- यह तो सबसे उत्कृष्ट।

अरे जो..., ठाकुर जी स्वयं कहते हैं कि जो मेरा भक्त है न, वह त्रिभुवनों को पावन करता है, उनका जो भक्त है। और हम ऐसी हैं कि उनके भक्त को तो छोड़ो, उनके ठाकुर की इच्छा पूर्ति हम करते हैं। तो हम, हमारी जो उपासना है, हमारा जो प्रेम है वो बिल्कुल विलक्षण है। तीर्थ को क्या पवित्र करना और क्या उनकी पूर्ति करना? गंगा

क्या प्रार्थना करती हैं? ऐसे संत आएँ जो मुझे पवित्र कर दें, मेरी... उनके दुःखों का निवारण करता है गंगा का संग उनमें स्नान कर के कि मेरी अपवित्रता का निवारण हो। अरे, मंजरियाँ तो ठाकुर के दुःख का निवारण करती हैं।

और सारा काम किसका है? ममता का। ममता रस की खान। अनन्य ममता राधा में।

मेरे तो आधार श्यामा श्याम के चरणारविन्द...
श्यामा श्याम के चरणारविन्द, मेरे तो आधार...

यही जीवन का आधार है सुबह से रात तक का, तो तो रहेंगे खुश।

एक सन्त मिलें, उन्होंने हमें बोला कि आजकल वृन्दावन का वातावरण भी काफी दूषित है। लोग गाने चलाए रखते हैं। जिनका मन भगवत् चरणारविन्दों में लगा है, राधारानी के चरणारविन्दों में लगा है, वो तो वहीं लगा रहेगा, वो हर चीज़ को भगवान् से सम्बन्धित रखते हैं। उन्होंने हमें बोला कि एक गाना चल रहा था..., तो बहरे तो हैं नहीं, सुनाई तो देगा जब दर्शन करने भी जाएँगे बिहारी जी के, तो सुनाई तो देता ही है। तो कहते हैं- एक गाना चल रहा था- हमको प्यार है तुमसे कितना श्यामा श्यामा, उन्होंने इस प्रकार से बताया। हमको प्यार है तुमसे कितना श्यामा श्यामा, तुमसे मिलकर तुमको है बताना। तो हम ये सोच रहे थे वास्तव में ये भक्ति का मूल मन्त्र है, कि क्या राधारानी हमारे समक्ष आएँगी तो क्या हम हृदय से बोल सकते हैं, कि तुमसे मिलकर तुमको है बताना, कि हमें तुमसे कितना प्यार है, कितना प्यार है स्वामिनी हमें तुमसे? इतना प्यार है। तुमसे मिलकर तुम्हें बताना है तुमसे इतना प्यार है, तुमसे मिलकर, बिल्कुल मिलकर ही बताना है। हमें तुमसे इतना प्यार है। क्या हमारा है, कि स्वामिनी आ जाएँ? वों आ जाएँ आ जाएँ... तुमसे मिलकर तुमको बताना है कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ। हे श्यामा श्याम, श्यामा श्याम यह कहा जा रहा है। राधारानी तुमसे कितना प्रेम हम करते हैं, तुमसे मिलकर बताना चाहते हैं। दर्शन दो, सेवा दो। यह महामन्त्र बन सकता है जीवन का। तुमसे मिलकर तुमको बताना है राधारानी, तुमसे मिलकर, मिल मिलकर मिलना है। मिलकर मिलना है। राधारानी तुमसे मिलकर तुम्हें बताना है। वास्तव में तुमसे बहुत प्रेम है तो ही तो उनके आनंद का झरना हमारे हृदय में बहेगा, नहीं तो बहेगा कैसे? हम ये पंक्ति बोल सकते हैं क्या कि तुमसे मिलकर तुमको बताना चाहते हैं कि तुमसे कितना प्रेम है? जब पंक्ति नहीं बोल सकते तो प्रेम कैसे बहेगा हमारे हृदय से?

गुरु सेवा, सन्त सेवा- सब राधा सेवा के अन्तरगत होनी चाहिए। मुख्य तो राधा हमारी प्राण होनी चाहिए। ठाकुर की प्राण हैं, मंजरियों की प्राण हैं, तो हम भी तो हैं। उनकी प्राण हैं तो हमारी भी होनी चाहिए। हमारी नहीं हैं तो हमें आनंद कैसे त्रिकाल में प्राप्त होगा? त्रिकाल में- भूत, भविष्य, वर्तमान। जितना हरे कृष्ण कर रहे हैं, हरे कृष्ण का मतलब क्या है? मंजरी भाव और क्या है? हरे कृष्ण का मतलब मंजरी भाव।

जिसको हम अपना मानते हैं, उससे कम अपना मानने वालों का हमारे हृदय में वैसे ही स्थान कम हो जाता है। किसी न किसी को जीवन का आधार तो बनाया ही होता है, बच्चे, बीवी, माँ-बाप इत्यादि। वही कह रहे हैं- *जननी जनक बन्धु सुत दारा,* माँ से हटाओ, पिता से, सब से, कोई नाम भी लेने की जरूरत नहीं। राधारानी में डाल दो तो बाकी सब से अपने आप ही हट जाएगा। उनके सुख में सुखी, उनके दुःख में दुःखी।

जब भोग लगा रहे हैं, तो चिन्तन चले- "मीठा लग रहा है तरबूज़? मसाला ठीक डाला है न? उन्हें कैसा लग रहा होगा? कैसे लग रहा होगा उन्हें?" जब हम भोग लगाते हैं तो जब ठाकुर पाते हैं, पाने के बाद स्वाद बिल्कुल अलग हो जाता है। राधा जब पाती हैं तो वह वो स्वाद नहीं होता तरबूज़ का जो ठाकुर के पाने से पहले होता है, स्वाद बदल जाता है। और जब राधा को प्रसाद मिलता है, कृष्ण प्रसादी, तो जब राधा लेती हैं, उसके बाद वह स्वाद तीसरे दर्जे का होता है। एक तरबूज़ का दर्जा, जो हम सब खाते हैं; एक कृष्ण प्रसादी; जब राधा लेती हैं तो वह युगल प्रसादी आस्वादन; फिर मंजरियाँ लेती हैं, फिर हम। तो स्वाद ही अलग होता है। भोग लगाते समय यह चिन्तन चलना चाहिए, स्वाद ही बदले जा रहा है। कोई आम थोड़े न खा रहा है अन्त में व्यक्ति? राधारानी की गंध ऐसी होती है कि वह कृष्ण को पूर्ण रूप से मत्त कर देती है, राधारानी का लावण्य, राधारानी की कान्ति, सब कितनी आकर्षक होती है कि पूर्ण रूप से मत्त कर देता है तो जो अधरामृत होता होगा जो हम पाएँगें वो कैसा होगा? प्रसाद लेते हुए यह सोचना चाहिए- ये मेरी स्वामिनी का अधरामृत है।

इतनी देर भजन किया और एक बारी वो समाचार देख लिया, news, हो गया चौपट जितने सालों का किया था। राधारानी की कथा सुन कर कोई कैसे अखबार, news देख सकता है? हमें कोई होश ही नहीं होना चाहिए कि क्या हो रहा है जगत में। अब बताईए Nambibia में कुछ हो रहा हो, Zimbabwe में, Zambia में तो आपको कोई फर्क पड़ता है? फिर वही ४-५ लोगों के होने से सारा फर्क पड़ता है? सोचिए, यहाँ पर ही सारा गलत किया हुआ है हमने।

भगवान् ने तो हमें direct connection दे दिया है, आनंद के Powerhouse से, स्वयं से, राधारानी से और हम क्या कर रहे हैं? हमें Mall जाना है और इन्हीं के सुख में सुखी हैं। किसी भक्त ने कहा- "मेरा न हमेशा घर को लेकर भय बना रहता है।" क्यों? क्योंकि सारा मेरा उन्हीं को माना है, मेरे वो हैं। मेरा उनको मानोगे, राधारानी को, तो उनको लेकर भय बना रहेगा। नींद ही नहीं आएगी रात को। नींद कैसे आएगी? वे उठेंगी ही नहीं, मैं नहीं उठूँगा तो वे नहीं उठेंगी। तो इसलिए नींद नहीं आएगी। मैं उठूँ... मंगला क्या होती है? यह मंगला कोई morning programme होता है? मंगला होती है उनको उठाऊँ, घर जाएँ, शान्ति हो। नरवत् लीला है, नर लीला नहीं है, नरवत् लीला।

मेरा मानना। जीवन बदल जाना चाहिए। जीवन नहीं बदल रहा तो आनंद तो प्राप्त नहीं होगा। कुछ और प्राप्त हो जाएगा। हो सकता है हमारे पति गोविन्द हों, तो गोविन्द प्राप्त हो जाएगा, किन्तु वे गोविन्द प्राप्त नहीं होंगे। और वे भी प्राप्त हो जाएँ तो भी नहीं चाहिए। हमें तो, राधा के अधीन जो गोविन्द हैं, जिनकी इन्द्रियाँ सदा ही राधा वदनचन्द्र में ही आनंद पाती रहती हैं, वो वाले गोविन्द, वो वाली राधा, उनकी प्राप्ति हमें चाहिए। मेरी स्वामिनी। उनके बिना मेरी गति ही नहीं है। मेरी मति कहीं जानी नहीं चाहिए। वही हैं। काम धंधा बढ़ाना या कुछ..., सोचो ठाकुर में हमारी रुचि नहीं जानी चाहिए, तो हम तो पता नहीं क्या-क्या व्यापारों के, industry, ४ के ८ करोड़ करने में, ८ के २० करोड़ करने में लगे हैं। इससे क्या होगा? इससे राधा प्राप्त होंगी?

देखिए कोई भी गुरुजन, सन्त, कभी भी यह नहीं कहेंगे कि परिवार छोड़ो physically; वे कहेंगे- रहो वहीं, आपके पति हमेशा आपके साथ रहेंगे, बच्चे भी रहेंगे, परिवार, धन सब रहेगा। गुरु को और भगवान् को कुछ नहीं चाहिए, वे कहते हैं मन से राधारानी को अपना मान लो। गोपियाँ जगंल में रहती हैं ब्रज में क्या? कहाँ रहती हैं गोपियाँ? अपने घरों में तो रहती हैं, पति की सेवा है, सास है सब कुछ है..., मन कहाँ है? उसी प्रकार से **हमने रहना यहीं है, काम धंधा जो कर रहे हो, करो वही सब, पर मेरी स्वामिनी बस। यज्ञ स्वरुप करें, कि यज्ञ में आहूति डाल रहे हैं।** ये इसको hospital ले कर जाना है, पर ममता जो डाली हुई है, matching कपड़े करने हैं, बच्चों के साथ अपने matching भी ले लेते हैं- इतना गिरा हुआ स्तर हो जाता है भक्तों का भी। शर्म आती है कई बारी सोचकर। Matching shawl, इच्छा भी कैसी !! Matching क्या करना है? राधारानी के हृदय को matching करना है। तुम्हें क्या matching करना है?

अहो, मेरी स्वामिनी सुख रूप ! जो सर्व समर्थ, सबको आनंद प्रदान करने वाले आनंदस्वरूप भगवान को आनंद देती हैं, वे तुम्हें आनंद नहीं देंगी तुम उनके शरणागत होगे तो? तुम उन्हें अपना मानोगे तो? नहीं देंगी क्या? कुछ और देंगी? दुःख देंगी? जलन देंगी? कष्ट देंगी? तुम्हारे से ही वैर है उनको बस? रसनिधि रसासव हैं कृष्ण का, आनंद, रसस्वरूप, भगवान् का आसव हैं। आसव, addiction, नशा। नशा, आनंद..., और अपनी दासियों के प्रति तो कोटि दासी सुवत्सला हैं। वात्सल्य सिन्धु उमड़ता रहता है उनके अन्दर हमेशा। तो उनकी सेवा करके, दिन रात उनका चिन्तन करके हम हमेशा ही आनंद में ही रहेंगे।

दिन रात यही चलता रहे- अभी सुबह उठाया है तो हाँ, तो अब घर जा रही हैं, तो किसी सूर्य पूजा के बहाने से इनको फिर से लेकर चलना है मिलाने के लिए। अभी तो पहले जटिला को भी ठीक करना पड़ेगा- ये मन में चलता रहना चाहिए। जटिला को बोला- "देख मैं ले आई, छाया नहीं पड़ने दी ठाकुर कृष्ण की, एकदम, जैसे पलकों से आँखों को छुपा कर रखा जाता है, safe..., उसी प्रकार से राधारानी को लेकर आई हूँ ठाकुर से।" वो भी आर्शीवाद देती हैं- "तेरे ७ बच्चे हों, तुझे धन मिले।" जटिला आर्शीवाद देती हैं। यह चिन्तन दिमाग में चलता रहना चाहिए। "हाँ, ऐसा है - मैं अभी गोबर के कण्डे बना रही हूँ, तू सूर्य पूजा के लिए ले जाना।" "हाँ, हाँ, ले जाऊँगी, तुम चिन्ता मत करो।" और भीतर से प्रफुल्लित हैं। राधारानी जा रही हैं कहाँ? सूर्य पूजा के बहाने से। और फूला कौन नहीं रह रहा? आप फूल रहे हो। फूले नहीं समा रहे। चेहरा देखो फूले जा रहा है। हमारा यहाँ पर खा-खा कर पेट फूल जाता है, इतना ज़्यादा खाते हैं। अरे, प्रफुल्लित होना चाहिए उनके सुख से। भोजनानन्दी नहीं, भजनानन्दी बनना है। भजनानन्दी। अब वे जा रही हैं सूर्य पूजा के बहाने से ठाकुर से मिलने और हम आनंदित क्यों हो रहे हैं? क्योंकि वो मेरी हैं न, उनके अलावा मैं न कुछ जानता हूँ, न जानना चाहता हूँ।

और किसी न किसी को अपना मानकर हम जी ही रहे हैं और जीएँगें ही सही अनन्तकाल तक, कोई नई बात तो करनी नहीं है। किसी को तो मानोगे। तो आनंद स्वरूप, रसनिधि को मान लो तो रस में सराबोर रहोगे और किसी दुःख स्वरूप को, मिट्टी के पुतले को मान लो, ये अपना है तुम्हारा? यह पति है? यह मल मूत्र का भाण्ड, यह तुम्हारा पति है? यह तुम्हें आनंद देगा? मल मूत्र के डिब्बे, छोटे-बड़े डिब्बे, ये तुम्हें आनंद देंगे? अरे जो रसनिधि तुम्हें नहीं देंगें, ये देगा कोई आनंद? इनको अपना

मानना चाहिए? जड़ जगत के पुतलों को? अहो, मेरी स्वामिनी सुखरूप। न ही गति, उनके बिना मेरी कोई गति नहीं है।

बुद्धि का वास्तविक परिचय पता है क्या है? कोई पूछे क्या परिचय है बुद्धि का? वास्तविक परिचय? पलक झपकने जितना समय भी व्यर्थ नहीं गँवाते बुद्धिमान् व्यक्ति। वे राधारानी के सुख और दुःख का ही चिन्तन करते हैं, पलक झपकने जितने समय पर भी। हमारी पलक झपकी क्या, पूरी आँख खोल कर बैठे हैं घण्टों, सालों, घण्टों नहीं सालों, हमें कुछ है ही नहीं स्वामिनी को दुःख या सुख है। पलक झपकाने जितना समय भी उनके सुख और दुःख का ही चिन्तन करना है। ठाकुर के नहीं, मेरी स्वामिनी, जिन्हें ठाकुर से, जिन्हें मुझे मिलाना है, जिनके सारे कष्ट मुझे दूर करने हैं। बच्चों का नहीं होता कि मुझे पढ़ाना है, Loan लेते हो न बच्चे के लिए, जेब में पैसा नहीं है, घर बेच देते हो। किसके लिए? मेरे, वो मेरा factor है और कुछ भी नहीं। घर बेच देते हैं, installments में ले लेते हैं, क्या-क्या नहीं करते। कोई बोले यह मन्दिर के लिए, ठाकुर के लिए ले लो installments... "नहीं-नहीं, कैसी बात कर रहे हैं आप?" समझ रहे हैं?

वो देखते हैं। जब हम अपने समर्थ से अधिक सेवा करेंगे, कुछ भी करेंगे उनकी प्रीति के लिए, वे रीझ जाएँगे। वे रीझ गए तो सब काम हो गया। नहीं तो संसार को रिझाने में लगे रहो। जितना मर्ज़ी रिझालो। आजतक नहीं रिझाया क्या? अनन्तकाल से कर क्या रहे हो? ये सांसारिक लोगों को रिझाने में ही तो लगे हो। उसका परिणाम क्या है? ये कलियुग है, ५० साल ब्रह्मा के हो चुके हैं? तब भी थे और अब भी हैं। ये रिझाने का फल है, सारी दुनिया में मेरा मानने का। एक बार उनको अपना मान लें, एक बार, एक जीवन दे दो बस, एक जीवन। और भक्ति करने से बहुत सालों के बाद कुछ प्राप्त नहीं होगा- ऐसी नहीं है। तत्क्षण..., अभी..., अभी बोलो कि- "तुमसे मिलकर तुमको है बताना कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ..., राधारानी तुमसे मिलकर। आओ मेरे सामने, मुझे तुमको बताना है। मैंने तुमको नथ पहनानी है, मुझे तुमको चूड़ियाँ पहनानी हैं, तुम्हें नीले रंग की नथ डालनी है, नील रंग का पत्थर डालना है, मुझे तुमको नीलाम्बर डालना है, मुझे स्वर्णिम पत्रावली करनी है। तुम मेरे सामने आओ, तुमको मिलकर तुमको बताना है। मैंने हरे रंग की पत्रावली करनी है, मैंने यह आभूषण पहनाना है, मैंने चमेली की माला पहनानी है, मुझे गुलाब की इस तरीके से माला पहनानी है, तुम मेरे सामने आओ, मुझे तुम्हें पहनाना है। मेरी स्वामिनी, क्यों नहीं आओगी सामने? किसी और की हो क्या?"

मन नहीं लगता। मन क्यों नहीं लगता? मन तो लगता है, कैसे मन नहीं लगता? तुम मन को कहीं और लगा कर बैठे हो। हटाओ उसको, लगाओ यहाँ पर। आग लगे दुनिया को, तुमने क्या करना है? ये पृथ्वी प्रलय हो जाएगी, आग लग जाएगी तुम्हें कुछ फर्क पड़ेगा? तुम्हें कुछ होगा? कुछ नुक्सान हो जाएगा? तो कहीं कुछ भी हो, तुम्हें क्या करना है? सब अपने प्रारब्ध के अनुसार जीएँगें, तुम ने क्या करना है? तुम ने ठेका लिया हुआ है क्या? अपने जीवन का ठेका ले लो, उतना ही बहुत है। **अरे एक जीवन मिला है, सत् परम्परा मिल गई, सन्त मिल गए, मार्गदर्शन मिल गया, बताओ अब रह क्या गया?**

अहो मेरी स्वामिनी सुखरूप ! वे सुख रूप हैं- यह समझें। लक्ष्मी जिनके पीछे भागती हैं और वो जिनके पीछे भागते हैं, क्या सुख रूप होंगी। **श्रीकृष्ण राधारानी के मुखारविन्द के लावण्य अमृत का पान करने के लिए निरंतर तरसते रहते हैं, श्रीकृष्ण राधारानी के मुखारविन्द के लावण्य अमृत का पान करने के लिए निरंतर तरसते रहते हैं, और उनको वो आपकी कृपा से प्राप्त होता है।** इतना स्नेह करते हैं ठाकुर मंजरियों से, अपनी माँ से नहीं करते उतना स्नेह, अपने पिता से नहीं करते, ललिता विशाखा से नहीं करते जो आपसे करते हैं। और राधारानी तो कोटि दासी सुवत्सला हैं, वात्सल्यसिन्धु।। और चिल्ला-चिल्ला कर ठाकुर अनन्तकाल से बोल रहे हैं- *ममैव अंशो*- "तुम मेरे हो।" हम कहते हैं- "नहीं, यह बेटा मेरा, यह मल-मूत्र का यह भाण्ड मेरा, वो भाण्ड मेरा, तुम नहीं।" तुम तो आनंद स्वरूप हो। वो ठाकुर हैं, *"जा के अधीन सदा ही सांवरो"*। मैं हूँ जा के अधीन, *मल मूत्र के अधीन सदा ही बांवरो* । मैं बांवरा किनके अधीन हूँ? वो सांवरा किनके अधीन है, यह बांवरा किनके अधीन है? बद्धजीव।

सत्संग का मतलब है- जो बैठे हो न तो अलग व्यक्ति बैठा था, उठोगे न तो अलग व्यक्ति उठना चाहिए। वह व्यक्ति नहीं उठना चाहिए। तो तो सत्संग किया। यह कोई भागवत् सप्ताह थोड़ा न है, musical show थोड़ा न है कोई। उठोगे तो नया व्यक्ति उठना चाहिए तो तो सत्संग किया। **और बदलाव दिखना चाहिए जीवन में। पूरा बदलाव..., जीवन ही बदल जाना चाहिए।** जैसे accident हो जाता है, टाँग कट जाए तो जीवन नहीं बदल जाता? London चले गए, स्कूल पढ़ने चले गए, नौकरी करने चले गए तो जीवन नहीं बदल जाता? तो अब जीवन नहीं बदलना चाहिए दीक्षा हो गई? पता चल गया कि वो मेरी स्वामिनी, सुखरूप, तो जीवन नहीं बदलना चाहिए? वही के वही businessman, वही के वही पति, सारे गन्दे सम्बन्ध वैसे के वैसे हैं, उसके २ के ४ करने में लगे हुए हैं। जीवन तो continuously बदलता ही रहता है। शादी के बाद

बदला, विदेश जाओ तो बदलता है, नौकरी करो तो बदलता है। तो दीक्षा के बाद कैसे नहीं बदलेगा? सिद्धप्रणाली मिल गई, प्राण प्रतिष्ठित विग्रह मिल गए, आरती कर रहे हैं। आरती करते समय आँसू टपकने चाहिए। बताओ पकड़ लिया है किसी ने उनको तो क्या होगा? आरती तो इसलिए कर रहे हो न कि विघ्न हटें? और किसलिए कर रहे हो आरती?

जैसे हमने प्रारम्भ में कहा था- "मेरी स्वामिनी, मेरी स्वामिनी", ये हृदय के भीतर से पुकार करके जो जीव अपने आनंद प्राप्ति की निवृत्ति के लिए यहाँ आए हैं, उन सबका स्वागत है। यहीं से हम सत्र को विराम देंगे। आप सबको यह सुनने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय राधे।।